आनी वन मण्डल के सरघा और बागा-सराहन में कडु की खेती के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम

Training programmes for cultivation of Kadu at Sargha and Baga-Sarahan of Ani Forest Division

भा॰वा॰अ॰शि॰प॰-हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला द्वारा जाईका जड़ी बूटी सेल हिमाचल प्रदेश वन विभाग से वित्तपोषित सामान्य हित समूहों को औषधीय पौधे उगाने हेतु हैंडहोल्डिंग एवं कौशल विकास परामर्श परियोजना के तहत सरघा एवं बागा सराहन, निरमंड आनी में जड़ी बूटी सेल के तहत बनाए गए समूहों को क्रमशः 8 व 9 नवंबर 2025 को कड़ू उगाने, संरक्षण और इसके विपणन पर प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। डॉ॰ जोगिंदर सिंह चौहान प्रशिक्षण समन्वयक एवं परामर्श परियोजना अन्वेषक (PI) ने कहा कि यह परामर्श परियोजना जड़ी बूटी सेल जाईका, वन विभाग हिमाचल प्रदेश द्वारा वित्त पोषित की गई है। जिसका उद्देश्य सामान्य हितधारक समूहों को कड़ू एवं चिरायता जड़ी बूटियों को उगाने के बारे में हैंड होल्डलिंग स्पोर्ट एवं कौशल विकास करना है। इसी कड़ी में दो सामान्य हितधारक समूहों के लिए कडु की खेती हेतु प्रशिक्षण द्वारा जानकारी दी । डॉ सुशील कापटा, भा॰ व॰ से॰ एपीसीसीएफ़ (सेवानिवृत्त) ने प्रतिभागियों को प्रशिक्षकों द्वारा प्राप्त जानकारी को व्यावहारिक प्रयोग में लाकर औषधीय पौधों की खेती करने की सलाह दी और उन्होंने कहा कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम तभी सफल हो सकते हैं अगर प्राप्त जानकारी का उपयोग किया जाए अन्यथा विभाग और सरकार द्वारा किए गए प्रयास का कोई औचित्य नहीं रहता है। लोगों के सहयोग बिना सरकार की किसी भी योजना का वांछित परिणाम नहीं मिल सकता। किसान जड़ी बूटी उगाकर अतिरिक्त आय कमा सकते है। डॉ चमन राव, वां मण्डल अधिकारी आनी ने प्रतिभागियों को जड़ी बूटियां की खेती में बढ़-चढ़कर भाग लेने के लिए आवाहन किया। उन्होंने कहा कि अगर सामान्य हितधारक समूह के सदस्य चाहे तो वो जड़ी बूटियां वन भूमि में भी लगा

सकते हैं, इससे विभाग की ओर से सहयोग किया जाएगा। उन्होंने आगे कहा कि इससे भूमि अपरदन कम होगा, जड़ी बूटियां का संरक्षण होगा और साथ-साथ जड़ी बूटी उत्पादक समूह के सदस्य आर्थिक लाभ भी प्राप्त कर सकेंगे। डॉ॰ संदीप शर्मा, वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं समूह समन्वयक अनुसंधान ने समशीतोष्ण जलवायु में जड़ी बूटियों की खेती मुख्यत कडू की खेती के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कडू के एक पौधे से अधिक पौधे तैयार करने की मैक्रोप्रोलिफरेशन विधि के बारे में प्रतिभागियों को अवगत करवाया और कडू के लिए उचित प्रकार के खेत अथवा स्थान चुनने और संभावित दिक्कतों से निदान पाने हेतु प्रमुख सावधानियां सुझाई। डॉ॰ अश्वनी तपवाल, प्रभाग प्रमुख विस्तार ने औषधीय पौध उगाने हेतु जैव उर्वरक के बारे में जानकारी दी। उन्होंने जैव उर्वरक तैयार करने की हैंड्स ऑन प्रशिक्षण भी दिया तथा जैव उर्वरक का बीज भी वितरित किया, जिससे किसान स्वयं उर्वरक तैयार कर पाएंगे। उन्होंने आगे कहा कि जैव उर्वरक पौधों की जरूरत का स्थाई समाधान है वह पौधों को पोषक तत्व की कमी वाली भूमि में अच्छे से उगाने व जीवित रहने में मदद करते है। श्री खुशदिल सेवानिवृत डीएफओ ने प्रतिभागियों को औषधीय पौधों को उगाने के लिए प्रोत्साहित किया। डॉ. जोगिंदर चौहान ने इन क्षेत्रों में उगाने वाले उचित पौधों जैसे कि चोरा, वन ककड़ी, निहानी, कुठ इत्यादि की पहचान, उपयोग और महत्व के बारे में बताया। दोनों दिन चर्चा एवं व्याख्यान के माध्यम से जानकारी सांझा करने के बाद जड़ी बूटी उगाने वाले समूह सदस्यों को आन स्पॉट कड़ू उगाने में जो समस्याएं आ रही है उसका निवारण हेतु जरूरी बाते सुझाई गई। इसके लिए सभी विशेषज्ञ किसानों के साथ कडू के खेतों का दौरा किया और वहां उनके साथ आ रही समस्याओं का व्यावहारिक समाधान किया। दोनों दिन सामान्य हितधारक समूहों के सदस्यों, वन विभाग का फील्ड स्टाफ एवं अन्य किसानों सहित 50-50 लोगों ने प्रशिक्षण में भाग लिया। इस अवसर पर श्री विनोद नेगी वन परिक्षेत्र अधिकारी निरमंड, श्री सचिन शर्मा एस एम एस, निरमंड वन परिक्षेत्र के फील्ड स्टाफ भी उपस्थित रहे।

ICFRE-Himalayan Forest Research Institute, Shimla, under the Handholding and Skill Development Consultancy Project funded by the *JICA Jadi-buti Cell* of the Himachal Pradesh Forest Department, organized training and demonstration programs on cultivation,

conservation, and marketing of Kadu for the Common Interest Groups formed under the *Jadi-buti Cell* at Sargha and Baga Sarahan, Nirmand Ani, Kullu on 8th and 9th November, 2025, respectively. Dr. Joginder Singh Chauhan, Training Coordinator and Consultancy Project Investigator (PI), said that this consultancy project has been funded by the Jadi Buti Cell, JICA, Forest Department, Himachal Pradesh. The objective of the project is to provide hand-holding support and skill development to common stakeholder groups for cultivating medicinal herbs such as Kadu and Chirayata. In this series, two stakeholder groups were given training and demostartion. Dr. Sushil Kapta, IFS, APCCF (Retd.), advised participants to put into practical use the knowledge gained from the resource persons. He said that such training programs can only be successful, if the knowledge gained is actually used; otherwise, the efforts made by the department and the government serve no purpose. Without people's cooperation, no government scheme can achieve the desired results. He told that farmers can earn additional income by cultivating medicinal plants. Dr. Chaman Rao, DFO Ani, urged participants to actively take part in cultivating medicinal herbs. He said that if members of the stakeholder groups wish, they can plant medicinal plants even on forest land, for which the department will provide support. He added that this will reduce soil erosion, help conserve medicinal plants, and also provide economic benefits to the members of the medicinal plants producing groups. Dr. Sandeep Sharma, Scientist-G and Group Coordinator (Research), provided information about the cultivation of medicinal herbs in temperate region, especially the cultivation of Kadu. He informed participants about the macro-proliferation method for producing more plants from one Kadu plant

and suggested key precautions for selecting suitable fields or locations for Kadu and for overcoming potential difficulties. Dr. Ashwani Tapwal, Head Extension Division, provided information on bio-fertilizers for growing medicinal plants. He also gave hands-on training in preparing bio-fertilizers and distributed bio-fertilizer cultures so that farmers can prepare them on their own. He said that bio-fertilizers are a sustainable solution to the nutritional needs of plants, helping them grow better and survive even in nutrient-deficient soils. Mr. Khushdil, DFO (Retd.), encouraged participants to grow medicinal plants. Dr. Joginder Singh Chauhan discussed the identification, uses, and importance of suitable medicinal plants grown in these regions, such as Chora, Van Kakdi, Nihani, Kuth, etc. After discussions and lectures, suggestions were given to the herb-growing group members to resolve the issues; they were facing in cultivating Kadu. For this purpose, all experts, along with the farmers, visited Kadu fields and provided practical solutions to the problems they observed there. On both days, 50 participants from each common interest group including filed state of forest department of region and other farmers attended the training. On this occasion, Mr. Vinod Negi, Forest Range Officer, Nirmand; Mr. Sachin Sharma, SMS; and the field staff of Nirmand Forest Range were also present.

प्रशिक्षण और प्रदर्शन कार्यक्रम
सरघा के कडु उत्पादों के सामान्य हित समूह की हैंडहोल्डिंग सपोर्ट और कौशल विकास

प्रशिक्षण और प्रदर्शन कार्यक्रम
सरघा के कडु उत्पादों के सामान्य हित समूह की हैंडहोल्डिंग सपोर्ट और कौशल विकास

तर्राष्ट्रीय सहयोग एजेंसी (JICA)
द्वारा वित्त पोषित
वन विकास समिति सरघा
(के अंतर्गत)
समान रूचि समूह (CIG
र्दिक स्वागत कर
स्थान : सरघा, आनी

प्रशिक्षण और प्रदर्शन कार्यक्रम
सरघा के कडु उत्पादों के सामान्य हित समूह की हैंडहोल्डिंग सपोर्ट और कौशल विकास
भा.वा.अ.शि.प. - हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला

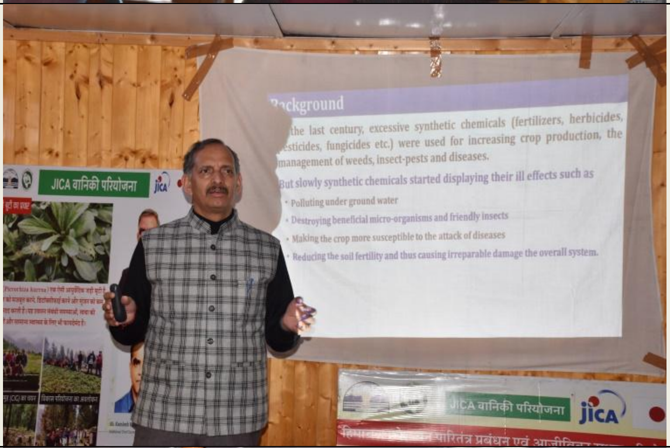
Background
the last century, excessive synthetic chemicals (fertilizers, herbicides, pesticides, fungicides etc.) were used for increasing crop production, the management of weeds, insect-pests and diseases.
But slowly synthetic chemicals started displaying their ill effects such as
Polluting under ground water
Destroying beneficial micro-organisms and friendly insects
Making the crop more susceptible to the attack of diseases
Reducing the soil fertility and thus causing irreparable damage the overall system.
JICA वानिकी परियोजना

आयोजक
लयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला
वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद
, पंथाघाटी, शिमला-171013, (हि.प्र.)
वित्तीय सहयोग
ईका (JICA), वन विभाग, हिमाचल प्रदेश

ग्राम वन
आपका हार्दिक

JICA
जापान अंतर्राष्ट्रीय सहयोग एजेंसी (JICA)
ग्राम वन विकास समिति सरघा
आपका हार्दिक स्वागत करता

JICA
ग्राम वन विकास समिति सरघा
आपका हार्दिक स्वागत करत

LiFE

LiFE
प्रशिक्षण और प्रदर्शन

LiFE
Lifestyle for Environment
हैंडहोल्डिंग सपोर्ट और कौशल विकास
हिमाचल प्रदेश

बागा सराहन, आनी, कुल्लू
आयोजक
भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं
कॉनिफर कैम्पस, पंथाघाटी,
जड़ी बुटी सेल, जाइका (JICA),

Organic Farming Practices for Quality
Medicinal Plants
LiFE

प्रशिक्षण और प्रदर्शन कार्यक्रम
बागा सराहन के कडू उत्पादकों के सामान्य हित समूह की
हैंडहोल्डिंग सपोर्ट और कौशल विकास

प्रशिक्षण और प्रदर्शन कार्यक्रम
बागा सराहन के कडू उत्पादकों के सामान्य हित समूह की
हैंडहोल्डिंग सपोर्ट और कौशल विकास

मीडिया कवरेज़

मार्गदर्शन निरमंड विकास खंड के बागा सराहन और सरगा में लोगों को कड़ू के औषधीय पौधे उगाने के लिए प्रेरित, प्रशिक्षण में दी उपयोगी जानकारी

जड़ी-बूटियों की खेती से बढ़ेगी किसानों की आय

निजी संवाददाता -निरमंड

वन मंडल आनी के अंतर्गत निरमंड विकास खंड के वन खंड सरगा एवं बागा सराहन में जड़ी -बूटी सेल के तहत बनाए गए समूहों के लिए आठ नवंबर को कड़ू उगाने और इसके विपणन पर एवं आठ व नौ नवंबर को इसे लेकर प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस अवसर पर डा जोगिंद्र सिंह चौहान प्रशिक्षण समन्वयक ने कहा कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम जड़ी -बूटी सेल जाइका वन विभाग हिमाचल प्रदेश द्वारा वित्त पोषित किया गया है। मुख्य अतिथि डा सुशील कापटा एपीसीसी सेवानिवृत्त ने प्रतिभागियों को प्रशिक्षकों द्वारा प्राप्त जानकारी को व्यावहारिक प्रयोग में लाकर जड़ी बूटियां की खेती करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम तभी सफल हो सकते हैं । अगर प्राप्त जानकारी का उपयोग वास्तव में किया जाए अन्यथा इस प्रकार की सरकार द्वारा की गई मेहनत का कोई औचित्य नहीं रह जाएगा। उन्होंने कहा कि बिना लोगों के सहयोग से सरकार की किसी भी योजना का वांछित परिणाम नहीं मिल सकता। लोग जड़ी-बूटियां उगाकर अतिरिक्त आय कमा सकते हैं । इस अवसर पर वनमण्डलाधिकारी आनी डॉ चमन राव ने प्रतिभागियों को जड़ी बूटियां की खेती में बढ़-चढ़कर भाग लेने का आवाहन किया। उन्होंने कहा कि अगर किसान चाहे तो वो जड़ी बूटियां को वन भूमि में भी लगा सकते हैं इसके लिए विभाग की ओर से उनका हर तरह का सहयोग किया जाएगा। उन्होंने आगे कहा कि इससे भूमि अपरदन सीमित होगा और जड़ी बूटियां का संरक्षण होगा और साथ.साथ जड़ी बूटी सेल के सदस्य इससे आर्थिक लाभ भी प्राप्त कर सकेंगे। डॉण् संदीप शर्मा वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं समूह समन्वयक अनुसंधान ने समशीतोष्ण जलवायु में जड़ी बूटियां की खेतीए मुख्यतरू कड़ू की खेती के बारे में जानकारी दी।उन्होंने इस दौरान कड़ू के एक पौधे से अधिक पौधे तैयार करने की विधि भी प्रतिभागियों के साथ साझा की यह कड़ू के लिए उचित प्रकार के खेत अथवा स्थान चुनने में बरतने वाली प्रमुख सावधानियां भी सुझाई। डॉ अश्वनी तपवाल प्रभाग प्रमुख विस्तार ने जैव उर्वरक के बारे में जानकारी दी। उन्होंने जैव उर्वरक तैयार करने का प्रशिक्षण भी दिया तथा जैव उर्वरक का बीज भी वितरित कियाए जिससे किसान स्वयं का उर्वरक तैयार कर पाएंगे । सेवानिवृत डीएफओ कुशल ने प्रतिभागियों को औषधीय पौधों को उगाने के लिए प्रोत्साहित किया।

प्रशिक्षण समन्वयक ने किया समस्याओं का समाधान

प्रशिक्षण समन्वयक डाक्टर जोगिंद्र चौहान ने क्षेत्रों के लिए उचित पौधों जैसे कि चोरा, वन ककड़ी, निहानी, कुठ के उपयोग और महत्व के बारे में भी लोगों को बताया। कड़ू उगाने में समस्याएं आ रही का निवारण किसानों को सुझाया गया। किसानों के साथ.साथ कड़ू के खेतों का दौरा भी किया गया। लोगों ने इस प्रशिक्षण में बढ़चढ़ कर भाग लिया । इस अवसर पर विनोद नेगी वन परिक्षेत्र अधिकारी, सचिन शर्मा एसएमएस, वन परिक्षेत्र का फील्ड स्टाफ भी विशेष रूप से उपस्थित रहे ।

औषधीय खेती की राह पर किसान

निरमंड में 'कड़ू' पौधे पर केंद्रित दो दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम

प्रेमराज कश्यप/हप्र
रामपुर बुशहर, 9 नवंबर

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, शिमला ने जायका जड़ी-बूटी सेल और हिमाचल प्रदेश वन विभाग के सहयोग से निरमंड विकास खंड के बागा सराहन और सरगा में दो दिवसीय औषधीय पौधों पर आधारित प्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित किया। इस प्रशिक्षण का उद्देश्य किसानों और सामान्य हित समूहों को 'कड़ू' जैसे मूल्यवान औषधीय पौधों की वैज्ञानिक खेती और विपणन से जोड़ना था।

कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. जोगिंदर सिंह चौहान ने बताया कि यह पहल जायका वन विभाग द्वारा वित्तपोषित है और इसका मकसद ग्रामीणों को जड़ी-बूटी खेती के माध्यम से आत्मनिर्भर बनाना है। उन्होंने कहा कि प्रशिक्षण का वास्तविक लाभ तभी मिलेगा जब किसान इसे अपने खेतों में व्यवहारिक रूप से अपनाएंगे। मुख्य अतिथि डॉ. सुशील कापटा (सेवानिवृत एपीसीसी) ने कहा कि जड़ी-बूटियों की खेती से न केवल किसानों की आय बढ़ेगी बल्कि पर्यावरण संरक्षण और भूमि सुधार में भी मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि सरकारी योजनाओं की सफलता जनसहयोग पर निर्भर करती है।

वनमंडलाधिकारी आनी डॉ. चमन राव ने प्रतिभागियों से जड़ी-बूटी की खेती में सक्रिय भागीदारी का आग्रह करते हुए कहा कि किसान वन भूमि पर भी औषधीय पौधे उगा सकते हैं, इसके लिए विभाग हर संभव सहयोग देगा। उन्होंने बताया कि इस पहल से भूमि कटाव रुकेगा, औषधीय पौधों का संरक्षण होगा और किसानों को आर्थिक लाभ मिलेगा।

वैज्ञानिकों ने बताई तकनीक : वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. संदीप शर्मा ने समशीतोष्ण जलवायु में कड़ू की खेती की वैज्ञानिक विधियां समझाईं। उन्होंने एक पौधे से अधिक पौधे तैयार करने की तकनीक, मिट्टी चयन और सिंचाई संबंधी सुझाव भी साझा किए। वहीं डॉ. अश्वनी तपवाल, प्रभाग प्रमुख (विस्तार), ने जैव उर्वरक तैयार करने का प्रशिक्षण दिया और किसानों को जैव उर्वरक बीज वितरित किए। उन्होंने बताया कि जैव उर्वरक पौधों की पोषण आवश्यकताओं को लंबे समय तक पूरा करते हैं और भूमि की उर्वरता बनाए रखते हैं।

आनी टुडे
डिजिटल अखबार

10.11.2025 दिवान राजा, आनी टुडे

प्रशिक्षण कार्यक्रम बागा सराहन और सरगा के जाईक सामान्य हित समूह को किया कड़ू औषधीय उगाने के लिए प्रशिक्षित

हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला द्वारा जायका जड़ी बूटी सेल हिमाचल प्रदेश वन विभाग के सहयोग से सरगा एवं बागा सरहान निरमंड आनी में जड़ी बूटी सेल के तहत बनाए गए समूहों कोक्रमशः 8 नवंबर 2025 कड़ू उगाने, और इसके विपणन पर एवं 8 व 9 नवंबर 2025 को दप्रशिक्षण एवं प्रदर्शन कार्यक्रमों का आयोजन किया गया. डॉ जोगिंदर सिंह चौहान प्रशिक्षण समन्वयक ने कहा कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम जड़ी बूटी सेल जाएगा वन विभाग हिमाचल प्रदेश द्वारा वित्त पोषित किए गए इनका उद्देश्य सामान्य हित समूहों एवं किसानों को कड़ू अन्य जड़ी बूटियों को उगाने के बारे में जानकारी देना था और उन्हें व्यवहारिक रूप से उगाने के लिए प्रशिक्षित करना था। मुख्य अतिथि डॉ सुशील कापटा एपीसीसी सेवानिवृत्ति ने प्रतिभागियों को प्रशिक्षकों द्वारा प्राप्त जानकारी को व्यावहारिक प्रयोग में लाकर जड़ी बूटियां की खेती करने की सलाह दी उन्होंने कहा कि यह प्रशिक्षण कार्यक्रम तभी सफल हो सकते हैं अगर प्राप्त जानकारी का उपयोग किया जाए अन्यथा इस प्रकार की सरकार द्वारा की गई मेहनत का कोई औचित्य नहीं रह जाएगा बिना लोगों के सहयोग से सरकार की किसी भी योजना का वांछित परिणाम नहीं मिल सकते... आप जड़ी बूटी उगाकर अतिरिक्त आय कमा सकते है। इस अवसर पर डॉ चमन राव डीएफओ आनी ने प्रतिभागियों को जड़ी बूटियां की खेती में बढ़-चढ़कर भाग लेने के लिए आवाहन किया उन्होंने कहा कि अगर किसान चाहे तो वो जड़ी बूटियां वन भूमि में भी लगा सकते हैं इससे विभाग की ओर से हर तरह का सहयोग किया जाएगा। उन्होंने आगे कहा कि इससे भूमि अपरदन सीमित होगा, जड़ी बूटियां का संरक्षण होगा और साथ-साथ जड़ी बूटी सेल के सदस्य आर्थिक लाभ भी प्राप्त कर सकेंगे। डॉ संदीप शर्मा वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं समूह समन्वयक अनुसंधान ने समशीतोष्ण जलवायु में जड़ी बूटियां की खेती मुख्ता कड़ू की खेती के बारे में जानकारी दी। उन्होंने कड़ू के एक पौधे से अधिक पौधे तैयार करने की विधि प्रतिभागियों से साझा की वह कड़ू के लिए उचित प्रकार के खेत अथवा स्थान चुनने में प्रमुख सावधानियां सुझाई। डॉ अश्वनी तपवाल प्रभाग प्रमुख विस्तार ने जैव उर्वरक के बारे में जानकारी दी उन्होंने जैव उर्वरक तैयार करने का प्रशिक्षण भी दिया तथा जैव उर्वरक का बीज भी वितरित किया जिससे किसान स्वयं का उर्वरक तैयार कर पाएंगे उन्होंने आगे कहा कि जब उर्वरक पौधों की जरूरत का स्थाई समाधान है वह पौधों को पोषक तत्व की कमी वाली भूमि में अच्छे से उगाने व जीवित रहने में मदद करतते है। श्री कुशल सेवानिवृत DFO ने प्रतिभागियों को औषधीय पौधों को उगाने के लिए प्रोत्साहित किया। डॉ. जोगिंदर चौहान इन क्षेत्रों के लिए उचित पौधों जैसे कि चोरा, बन ककड़ी, निहानी, कुठ के उपयोग और महत्व के बारे में बताया। दोनों दिन जानकारी सांझा करने के बाद जड़ी बूटी उगाने वाले समूह सदस्यों को उनके फील्ड में जहां वह कड़ू उगा रहे है वहां गए और आनस्पॉट जो भी कड़ू उगाने में समस्याएं आ रही थीं उसका निवारण उन्हें सुझाया गया..किसानों के साथ-साथ कड़ू के खेतों का दौरा किया और वहां उनके साथ आ रही समस्याओं का व्यावहारिक समाधान किया। दोनों दिन 50- 50 सामान्य हितधारक समूहों के सदस्य सहित लोगों ने प्रशिक्षण में भाग लिया। इस अवसर पर श्री विनोद नेगी वन परिक्षेत्र अधिकारी निरमंड, श्री सचिन शर्मा एस एम एस, निरमंड वन परिक्षेत्र के फील्ड स्टाफ भी उपस्थित रहे।

किसानों को जड़ी-बूटी उगाने का दिया प्रशिक्षण

सरघा और बागा सराहन में प्रशिक्षण शिविर का आयोजन, लोगों को कडू उगाने के बताए फायदे

संवाद न्यूज एजेंसी

निरमंड (कुल्लू)। हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान शिमला ने जायका जड़ी-बूटी सेल और वन विभाग के सहयोग से सरघा और बागा सराहन में ग्रामीणों को औषधीय पौधों की खेती के लिए प्रोत्साहित किया। इस दौरान जड़ी-बूटी सेल के तहत बनाए समूहों को औषधीय कडू की खेती और इसके विपणन के बारे में जानकारी दी गई।

प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. जोगिंदर सिंह चौहान ने बताया कि प्रशिक्षण कार्यक्रम का उद्देश्य सामान्य हित समूहों और किसानों को कडू सहित अन्य जड़ी-बूटियां उगाने के लिए प्रेरित करना है। प्रतिभागियों को औषधीय पौधों की व्यावहारिक खेती के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा है।

बागा सराहन में जड़ी-बूटियां उगाने के बारे में प्रशिक्षण देते विशेषज्ञ। -संवाद

मुख्य अतिथि डॉ. सुशील कापटा ने प्रतिभागियों से आग्रह किया कि वे प्रशिक्षकों से मिली जानकारी का व्यावहारिक उपयोग करें और जड़ी-बूटी की करें। उन्होंने कहा कि सरकारी योजनाओं के वांछित परिणाम तभी संभव हैं जब लोग सक्रिय भागीदारी निभाएं।

इस अवसर पर डीएफओ आनी डॉ. चमन राव ने ग्रामीणों से जड़ी-बूटी की खेती में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि इच्छुक किसान चाहें तो वन भूमि में भी जड़ी-बूटियां लगा सकते हैं, जिसके लिए विभाग हरसंभव सहयोग करेगा। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. संदीप शर्मा ने समशीतोष्ण जलवायु में जड़ी-बूटी विशेष रूप से कडू की खेती की तकनीकी जानकारी दी। उन्होंने कडू के पौधे से अधिक पौधे तैयार करने की विधि बताई।

डॉ. अश्वनी तपवाल ने जैव उर्वरक की जानकारी दी। उन्होंने बीज भी वितरित किए। डॉ. जोगिंदर चौहान ने चोरा, बन ककड़ी, निहानी और कुठ जैसे पौधों के उपयोग और महत्व की विस्तार से जानकारी दी।

****